International Advance Journal of Engineering, Science and Management (IAJESM)
Multidisciplinary, Indexed, Double Blind, Open Access, Peer-Reviewed, Refereed-International Journal.
SJIF Impact Factor =7.938, July-December 2024, Submitted in October 2024, ISSN -2393-8048

समय, स्मृति और शाश्वत यथार्थ: शिवप्रसाद सिंह का आलोचनात्मक अध्ययन

संजय कुमार (शोधकर्ता), हिंदी विभाग, एनआईआईएलएम विश्वविद्यालय, कैथल (हरियाणा)
डॉ आरती, अनुसंधान पर्यवेक्षक, हिंदी विभाग, एनआईआईएलएम विश्वविद्यालय, कैथल (हरियाणा)

सार

शिवप्रसाद सिंह (1928–1998) ने 'रुद्र काशिकेय' उपनाम से लेखन किया और अपने करियर का एक बड़ा हिस्सा बनारस हिंदू विश्वविद्यालय में पढ़ाते हुए बिताया। उन्होंने हिंदी कथा-साहित्य में एक ऐसी रचना-यात्रा तय की जो एक ही बार-बार उभरने वाली समस्या के इर्द-गिर्द घूमती है: कोई जगह, लोग या व्यक्ति ऐतिहासिक बदलावों के बीच खुद को कैसे बचाए रखता है और उनमें पूरी तरह घुल-मिलकर खत्म नहीं होता। यह शोध-पत्र समय, स्मृति और शाश्वत सत्य के परस्पर जुड़े दृष्टिकोणों के माध्यम से सिंह के कथा-साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन करता है। इसमें उनकी 'काशी त्रयी' — 'वैश्वानर', 'नीला चाँद' और 'गली आगे मुड़ती है' — के साथ-साथ उनके आंचलिक उपन्यासों, जैसे 'अलग-अलग वैतरणी', पर विशेष ध्यान दिया गया है। यह पत्र बर्गसन की 'अवधि' की अवधारणा, एलियाडे के चक्रीय और पवित्र समय के सिद्धांत, रिकोर के स्मृति संबंधी नैरेटिव सिद्धांत और बाख्तिन के 'क्रोनोटोप' के विचार के साथ-साथ 'काल', 'स्मृति' और 'सनातन सत्य' जैसी भारतीय अवधारणाओं का उपयोग करता है। इसके आधार पर यह तर्क दिया जाता है कि सिंह का कथा-साहित्य काशी शहर को 'शाश्वत वापसी' (eternal return) के एक 'क्रोनोटोप' के रूप में प्रस्तुत करता है। इसमें ऐतिहासिक नुकसान और पवित्र निरंतरता के बीच एक लगातार बना रहने वाला, अनसुलझा तनाव होता है, न कि एक दूसरे के अधीन हो जाता है। यह पत्र आगे यह भी तर्क देता है कि सिंह का आंचलिक कथा-साहित्य इसी मूल प्रश्न को एक ऐसे परिवेश में ले जाता है जहाँ किसी ब्रह्मांडीय या दैवीय स्वीकृति का सहारा नहीं लिया जाता, जिससे निरंतरता बनाए रखना एक अधिक कठिन और विवादित उपलब्धि बन जाती है। अंत में, यह अध्ययन सिंह को हिंदी साहित्य के इतिहास-लेखन के संदर्भ में स्थापित करता है और आगे के तुलनात्मक शोध के लिए दिशा-निर्देश सुझाता है।

विशेष शब्द: शिवप्रसाद सिंह; रुद्र काशिकेय; नीला चाँद; काशी त्रयी; समय; स्मृति; शाश्वत वापसी।

1. परिचय

शिवप्रसाद सिंह (1928–1998), जिन्होंने 'रुद्र काशिकेय' उपनाम से लेखन किया और अपने करियर के ज़्यादातर समय बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी में हिंदी साहित्य पढ़ाया, आधुनिक हिंदी कथा-साहित्य में एक खास जगह रखते हैं। उन्हें एक तरफ़ उत्तरी भारत के ग्रामीण जीवन के कथाकार के तौर पर याद किया जाता है—उनके उपन्यास 'अलग-अलग वैतरणी' ने उन्हें फणीश्वरनाथ रेणु से जुड़ी 'आंचलिक' या क्षेत्रीय शैली की श्रेणी में ला खड़ा किया—और दूसरी तरफ़, काशी (वाराणसी शहर) पर आधारित एक महत्वाकांक्षी शहरी त्रयी (तीन उपन्यासों की शृंखला) के रचयिता के तौर पर भी। इस त्रयी का समापन 'नीला चाँद' उपन्यास के साथ हुआ, जिसके लिए उन्हें 1990 में साहित्य अकादमी पुरस्कार के साथ-साथ व्यास सम्मान और शारदा सम्मान भी मिला। इन दो तरह की पहचानों के बीच उनके काम का एक ऐसा हिस्सा है जो मूल रूप से एक ही समस्या पर केंद्रित है: कोई जगह, कोई समाज या कोई व्यक्ति समय के गुज़रने के साथ उसमें विलीन हुए बिना कैसे अपना अस्तित्व बनाए रखता है? सिंह का कथा-साहित्य बार-बार ऐतिहासिक समय के बहाव—जो चीज़ों को मिटाता और बदलता है—और उस बहाव के नीचे या पीछे मौजूद किसी चीज़ के दावे के बीच के तनाव पर लौटता है; वह चीज़ हो सकती है—कोई याद, कोई भू-दृश्य, या कोई ऐसी आध्यात्मिक सच्चाई जिसे हिंदू चिंतन में लंबे समय से 'सनातन' (शाश्वत) कहा गया है।

यह लेख शिवप्रसाद सिंह के कथा-साहित्य का आलोचनात्मक अध्ययन करता है, जिसके लिए शीर्षक में बताए गए तीन नज़रियों का इस्तेमाल किया गया है: समय, स्मृति और शाश्वत सत्य। इन्हें अलग-अलग विषयों की तरह एक-एक करके गिनाने के बजाय, यहाँ पेश किया गया तर्क इन्हें एक ही व्याख्यात्मक नज़रिए के तौर पर देखता है। सिंह के उपन्यासों में समय को शायद ही कभी क्षणों के एक अमूर्त और एकसमान क्रम के रूप में महसूस किया जाता है; यह बनावटदार, कई परतों वाला और अक्सर चक्रीय होता है, जो घड़ी के बजाय रीति-रिवाजों, नदी और मौसम की बार-बार दोहराई जाने वाली लय पर आधारित होता है। इसी तरह, स्मृति केवल पात्रों की मनोवैज्ञानिक क्षमता नहीं है, बल्कि काशी शहर की अपनी सांस्कृतिक और भू-वैज्ञानिक परत है; इसलिए इसकी गलियों में चलने का मतलब है सदियों के सफ़र से गुज़रना। सिंह 'शाश्वत सत्य' को इतिहास से भागने के रास्ते के तौर पर नहीं, बल्कि उस आधार के तौर पर पेश करते हैं जिस पर ऐतिहासिक बदलावों को समझा और सहा जा सकता है — यह एक ऐसी स्थिर जगह है (एक अलग साहित्यिक परंपरा के मुहावरे में कहें तो 'स्टिल पॉइंट') जिसके चारों ओर काशी की गलियों, राजाओं, तवायफ़ों और आम गृहस्थों की घूमती हुई दुनिया चक्कर लगाती है।

इसके बाद के अध्याय पाँच बड़े हिस्सों में आगे बढ़ते हैं। पहला हिस्सा सिंह को उनके जीवन और साहित्य के माहौल में रखता है, क्योंकि उनके अपने जीवन का भूगोल — बनारस में परवरिश, गंगा के किनारे पढ़ाई और पढ़ाने में बीता करियर, ग्रामीण भारत और यूनिवर्सिटी वाले शहर की बौद्धिक धाराओं से सीधा जुड़ाव — उनकी कहानियों के काल्पनिक भूगोल से अलग नहीं किया जा सकता। दूसरा हिस्सा कहानी में समय और यादों को समझने के लिए एक सैद्धांतिक शब्दावली बनाता है। इसमें बर्गसन की 'अवधि' की अवधारणा, मिर्सिया एलियाडे का चक्रीय और पवित्र समय पर काम, पॉल रिकोर की यादों की नैरेटिव थ्योरी और मिखाइल बाख्तिन के 'क्रोनोटोप' के विचार का इस्तेमाल किया गया है, साथ ही 'काल' (समय), 'स्मृति' (याद) और 'सनातन सत्य' (शाश्वत सत्य) जैसी खास भारतीय श्रेणियों को भी ध्यान में रखा गया है। तीसरा और चौथा हिस्सा 'काशी ट्रिलॉजी' — 'वैश्वानर', 'नीला चाँद' और 'गली आगे मुड़ती है' — की बारीकी से आलोचनात्मक पड़ताल करता है। इन्हें उस शाश्वत शहर पर एक लंबी सोच के तौर पर पढ़ा जाता है। इसके बाद क्षेत्रीय या 'आंचलिक' साहित्य की ओर थोड़ा ध्यान दिया जाता है ताकि यह समझा जा सके कि समय से जुड़े यही मुद्दे शहर से गाँव तक कैसे पहुँचते हैं। आखिरी हिस्सा हिंदी साहित्य के इतिहास में सिंह की जगह पर विचार करता है और इस बात पर निष्कर्ष निकालता है कि उनका काम व्यापक रूप से समय के प्रति जागरूक साहित्य की थ्योरी में क्या योगदान देता है। शुरुआत में ही यह कह देना चाहिए कि यह एक आलोचनात्मक और व्याख्यात्मक अध्ययन है, न कि मूल पाठ या भाषा-विज्ञान पर आधारित अध्ययन। सिंह ने हिंदी में लिखा था, और उनके ज़्यादातर बड़े साहित्य अंग्रेज़ी पढ़ने वालों के लिए मुख्य रूप से सारांश, अनुवाद के अंश और दूसरे विद्वानों के काम के ज़रिए ही उपलब्ध हैं, न कि पूरे साहित्यिक अनुवाद के रूप में। इसलिए, यहाँ दी गई व्याख्याएँ संरचना, विषय और सांस्कृतिक तर्क के स्तर पर हैं — यानी उस स्तर पर जहाँ कोई उपन्यास समय और यादों के साथ अपना रिश्ता बनाता है — न कि मूल हिंदी गद्य के लाइन-दर-लाइन शैली-विश्लेषण के स्तर पर। यह काम असल में उन विद्वानों का है जो मूल पाठ पर काम करते हैं, और यह अध्ययन उस काम की जगह लेने के बजाय उसमें मदद करने की उम्मीद करता है।

2. ज़िंदगी, माहौल और काशी के एक उपन्यासकार का बनना

शिवप्रसाद सिंह की कहानियों और उपन्यासों में समय और यादों की बात उनकी ज़िंदगी की एक ऐसी घटना से शुरू होती है जिसे एक तरह से इत्तेफ़ाक कहा जा सकता है: उनका जन्म 1928 में हुआ और मौत 1998 में; यानी उनकी ज़िंदगी का सफ़र ठीक उसी दौर में गुज़रा जब भारत में औपनिवेशिक शासन के आखिरी कुछ दशक और आज़ादी के शुरुआती पाँच दशक बीत रहे थे। दूसरे शब्दों में, वे उस समय बड़े हो रहे थे जब भारतीय बौद्धिक जगत अपने अतीत के साथ अपने रिश्तों को नए सिरे से तय कर रहा था — यह तय किया जा रहा था कि औपनिवेशिक दौर से पहले की विरासत में से क्या बचाकर रखना है, किसे आधुनिक बनाना है और किसे चुपचाप पीछे छोड़ देना है। इस दौर में तैयार हुए एक लेखक के तौर पर, जिन्होंने अपनी पेशेवर ज़िंदगी बनारस हिंदू यूनिवर्सिटी में हिंदी साहित्य के शिक्षक और विद्वान के रूप में बिताई, वे स्वाभाविक रूप से निरंतरता और बदलाव के बारे में सवाल पूछने की स्थिति में थे; क्योंकि उनका रोज़मर्रा का माहौल — खुद बनारस शहर — अपनी बनावट, अपने घाटों और अपने कभी न टूटने वाले धार्मिक रीति-रिवाजों के ज़रिए यह सवाल भौतिक रूप से सामने रखता है।

सिंह का करियर मोटे तौर पर दो आपस में जुड़े हुए हिस्सों में बँटा है। पहला हिस्सा वह है जिसके लिए उन्हें — कुछ हद तक नकारात्मक अर्थ में — 'आंचलिक' या क्षेत्रीय लेखक का लेबल दिया गया: जैसे 'अलग-अलग वैतरणी' जैसे उपन्यास और कहानियाँ, जिनमें उत्तरी भारत के ग्रामीण इलाकों की बोलियों, रीति-रिवाजों और मुश्किलों को विषय-वस्तु बनाया गया था। उस दौर के हिंदी के बड़े आलोचक इस तरह की लेखन शैली को कमतर और महज़ दस्तावेज़ी मानते थे, जिसमें गंभीर साहित्य से अपेक्षित वैश्विक समझ और परिष्कार की कमी होती थी; फिर भी, रेणु के बाद सिंह को हिंदी में इस शैली के सबसे महत्वपूर्ण लेखकों में से एक माना गया। दूसरा हिस्सा — जिसे आसानी से किसी क्षेत्रीय लेबल के तहत नहीं रखा जा सकता — वह है काशी ट्रिलॉजी (तीन उपन्यासों की श्रृंखला): 'वैश्वानर', 'नीला चाँद' और 'गली आगे मुड़ती है'। इसमें सिंह ने गाँव से अपना ध्यान हटाकर प्राचीन शहर की ओर लगाया और ऐसा करते हुए उन्हें वह विषय-वस्तु मिली जिसने उन्हें सबसे प्रतिष्ठित सम्मान दिलाए।

इस ट्रिलॉजी की शुरुआत अपने आप में समय और संस्कृति के अनुवाद की एक ऐसी प्रक्रिया है जिस पर गौर करना ज़रूरी है। माना जाता है कि सिंह ने लॉरेंस डरेल के 'अलेक्जेंड्रिया क्वार्टेट' से औपचारिक प्रेरणा ली है। यह उपन्यासों का एक ऐसा सेट है जो अलग-अलग नज़रियों से एक-दूसरे से जुड़ी घटनाओं को फिर से बताता है, ताकि एक ही शहर अलग-अलग सच सामने लाए—यह इस बात पर निर्भर करता है कि उसे कौन और कब याद कर रहा है। काशी पर उस संरचनात्मक विचार को लागू करना कोई साधारण नकल नहीं थी: डरेल के लेखन में अलेक्जेंड्रिया औपनिवेशिक कॉस्मोपॉलिटनवाद और कामुक साज़िशों का शहर है, जबकि हिंदू ब्रह्मांड विज्ञान में काशी सात मोक्ष-दायिनी तीर्थों में से एक है—ऐसे शहर जो जन्म-मरण के चक्र से मुक्ति दिलाने में सक्षम हैं। धार्मिक परंपरा के अनुसार, यह शहर समय से भी पुराना है और कुछ मान्यताओं में तो युगों की सामान्य गणना से भी परे है। एक ऐसे शहर के लिए डरेल की कई नज़रियों वाली और परत-दर-परत तकनीक को अपनाना, जो पहले से ही शाश्वत होने का दावा करता है, एक खास कोशिश है: समय की प्राचीन, चक्रीय अवधारणा की सेवा में एक आधुनिक, उपन्यास-शैली का इस्तेमाल। यह अध्ययन बताता

है कि याददाश्त की एक आयातित साहित्यिक तकनीक और शाश्वतता के स्वदेशी दर्शन के बीच का यही तनाव पूरी त्रयी का मुख्य आधार है।

यह भी ध्यान देने योग्य है कि 'गली आगे मुड़ती है'—भले ही संरचनात्मक रूप से त्रयी के आंतरिक कालक्रम में तीसरा भाग हो—असल में 1967 में सबसे पहले प्रकाशित हुई थी। इसी उपन्यास ने सिंह को हिंदी शहरी-कथा साहित्य में एक गंभीर लेखक के तौर पर स्थापित किया; इससे पहले उन्हें अपनी तकनीकी रूप से प्रयोगधर्मी लघु कथा 'दादी माँ' के लिए काफी सराहना मिल चुकी थी। इसके बाद 'वैश्वानर' और 'नीला चाँद' आए; 'नीला चाँद' 1990 में प्रकाशित हुआ और बड़े अंतर से उनकी सबसे सम्मानित रचना बनी। जिस क्रम में यह त्रयी लिखी गई—आधुनिक शहर के उपन्यास से शुरू होकर बाद में मध्ययुगीन सामग्री की ओर बढ़ना—वह खुद इसकी रचना-प्रक्रिया में याददाश्त की पीछे की ओर जाने वाली गति को दर्शाता है: ऐसा लगता है कि सिंह को अपनी रचनाओं में काशी के नीचे दबी सदियों को पूरे आत्मविश्वास के साथ उजागर करने से पहले, गलियों और रोज़मर्रा की ज़िंदगी वाली आज की काशी को स्थापित करने की ज़रूरत थी।

3. सैद्धांतिक आधार: कहानी में समय, याद और अनंत काल को समझना

सिंह की रचनाओं में समय की समझ को ठीक से समझने के लिए, समय से जुड़ी एक से ज़्यादा शब्दावलियों का ज्ञान होना मददगार होता है, क्योंकि 'काशी ट्रिलॉजी' (काशी पर आधारित तीन किताबों की श्रृंखला) जानबूझकर इनमें से कई के बीच के संगम पर काम करती है। पहली शब्दावली बर्गसन की है। हेनरी बर्गसन ने घड़ी के समय — जो जगह से जुड़ा, बंटा हुआ और एक जैसा होता है — और 'ड्यूरेशन' (अवधि) के बीच फ़र्क बताया है। 'ड्यूरेशन' का मतलब है भीतरी अनुभव का वह जीता-जागता, गुणात्मक बहाव जिसमें बीते हुए पल पीछे छूटने के बजाय वर्तमान में घुल-मिल जाते हैं। यह इस बात को समझने में मदद करता है कि सिंह की कहानियों के कहने वाले और मुख्य पात्र शहर को कैसे महसूस करते हैं। इस ट्रिलॉजी के पात्र अतीत को सिर्फ़ एक अलग, खत्म हो चुकी घटना के तौर पर याद नहीं करते; अतीत वर्तमान अनुभव में एक महसूस होने वाले गहरे अहसास के तौर पर बना रहता है, ताकि कोई गली, मंदिर या रस्म-रिवाज़ का कोई काम महज़ एक तारीख़ न होकर, बर्गसन के शब्दों में, एक 'ड्यूरेशन' (समय का एक जीवंत अनुभव) बन जाता है।

दूसरी शब्दावली मिर्सिया एलियाडे की है, जिन्होंने समय की प्राचीन और धार्मिक धारणाओं का अध्ययन करते हुए एक सीधी रेखा वाले, ऐतिहासिक और न बदलने वाले समय और एक चक्र में चलने वाले, पवित्र समय के बीच फ़र्क बताया है। पवित्र समय वह है जो रस्मों और पौराणिक कथाओं के ज़रिए समय-समय पर नया होता रहता है, जिससे समुदाय एक पौराणिक शुरुआत की ओर 'अनंत वापसी' जैसा अनुभव कर पाते हैं। हिंदू ब्रह्मांड-विज्ञान में काशी को एक ऐसे शहर के तौर पर समझा जाता है जो 'शाश्वतता के दायरे में' मौजूद है, जो शिव के त्रिशूल पर बसा है और इसलिए रचना और विनाश के आम ब्रह्मांडीय चक्रों से बाहर है। यह एलियाडे के पवित्र समय की असल तस्वीर जैसा है: शहर की अपनी धार्मिक समझ पहले से ही उस 'अनंत वापसी' वाले ढांचे का दावा करती है जिसे एलियाडे प्राचीन सोच की खासियत बताते हैं। सिंह का साहित्य इस दावे को अपनाता है और उसे कहानी के ज़रिए दिखाता है, यह परखते हुए कि क्या एक अनंत, पौराणिक काशी उस साफ़ तौर पर ऐतिहासिक, जर्जर और आधुनिक हो रहे शहर के साथ रह सकती है जिसमें उनके पात्र असल में रहते हैं।

तीसरी शब्दावली पॉल रिकोर की है, जिन्होंने कहानी पर अपने मुख्य काम में समय और कहानी के रिश्ते को समझाया है। रिकोर के लिए, कहानी वह खास ज़रिया है जिससे इंसान समय को मानवीय नज़रिए से समझ पाते हैं, और याददाश्त कोई निष्क्रिय भंडार नहीं है, बल्कि कहानी बुनने की एक सक्रिय, लगातार चलने वाली प्रक्रिया है, जिसके ज़रिए कोई व्यक्ति या समुदाय बिखरे हुए अतीत से एक सुसंगत पहचान बनाता है। इस नज़रिए से 'काशी ट्रिलॉजी' को पढ़ने पर यह साफ़ होता है कि सिंह की कहानी कहने की ऊर्जा सिर्फ़ अतीत को दिखाने में ही नहीं, बल्कि किरदारों और एक पूरे शहर को अपनी कहानी के ज़रिए लगातार आगे बढ़ाते हुए दिखाने में लगी है; वे मध्यकालीन और आधुनिक काशी को एक ऐसी पहचान में जोड़ते हैं जो पीछे मुड़कर देखने पर एक जैसी और जुड़ी हुई लगती है।

एक चौथी और पूरक शब्दावली मिखाइल बाख्तिन का 'क्रोनोटोप' का कॉन्सेप्ट है। यह विचार बताता है कि साहित्य की कोई विधा समय और स्थान का एक खास मेल बनाती है, जिससे खास तरह का समय (जैसे रोमांस का रोमांचक समय या 'बिल्डुंग्सरोमन' यानी विकास-कथा का जीवनी-संबंधी समय) खास तरह की जगहों से अलग नहीं किया जा सकता। 'काशी ट्रिलॉजी' को 'शाश्वत शहर' के क्रोनोटोप के निर्माण के तौर पर पढ़ा जा सकता है: एक ऐसी काल्पनिक जगह जहाँ इतिहास के क्रम के सामान्य नियम लागू नहीं होते, क्योंकि वह जगह ही—नदी, घाट, मंदिर, श्मशान—ऐसी होती है जहाँ अतीत और वर्तमान को रस्मों और ब्रह्मांडीय मान्यताओं के ज़रिए एक-दूसरे के संपर्क में लाया जाता है।

इन तुलनात्मक ढाँचों के साथ-साथ, उन स्थानीय वैचारिक स्रोतों को भी ध्यान में रखना ज़रूरी है जिन्हें सिंह ने—बनारस के हिंदू बौद्धिक जगत में काम करने वाले हिंदी साहित्य के विद्वान के तौर पर—बाहर से लेने के बजाय स्वाभाविक रूप से अपनाया होगा।

भारतीय शास्त्रीय चिंतन में 'काल' (समय) को अक्सर सीधी रेखा के बजाय एक पहिए के रूप में देखा जाता है, खासकर 'कालचक्र' की छवि में। भारतीय कथा और भक्ति परंपराओं में लंबे समय से ब्रह्मांडीय समय के चक्र (युगों का आना-जाना) और रोज़ाना की पूजा-पाठ के स्थानीय, रस्मी समय को एक साथ मानने की परंपरा रही है। वहीं, 'स्मृति' का अर्थ सिर्फ़ व्यक्तिगत यादें नहीं, बल्कि याद रखी गई और आगे बढ़ाई गई लिखित और सामाजिक परंपराओं की एक पूरी श्रेणी है, जो 'श्रुति' (सीधे तौर पर प्रकट ज्ञान) से अलग है। और 'सनातन सत्य'—यानी शाश्वत या हमेशा कायम रहने वाला सत्य—वह शब्द है जिसे इस अध्ययन ने अपने शीर्षक के लिए चुना है। यह एक ऐसी सच्चाई को बताता है जिस पर ऐतिहासिक बदलावों का कोई असर नहीं पड़ता, और जिसके मुकाबले बाहरी दुनिया की नश्वर चीज़ों को एक अस्थायी और आंशिक रूप माना जाता है। यह अध्ययन मानता है कि सिंह का साहित्य ठीक उसी अंतर के बीच काम करता है जो एक तरफ़ इंसानों द्वारा बनाई गई, गलतियों की गुंजाइश वाली और सुनाई गई यादों के रूप में 'स्मृति' के बीच है, और दूसरी तरफ़ एक ऐसे आध्यात्मिक और अटल सत्य के दावे के रूप में 'सनातन सत्य' के बीच है जिसकी ओर यादें इशारा तो करती हैं, लेकिन उसे कभी पूरी तरह से पकड़ नहीं पातीं।

4. काशी ट्राइलॉजी और 'इटरनल रिटर्न' (हमेशा लौटने) का ढांचा

अगर 'काशी ट्राइलॉजी' को एक ही रचना के तौर पर पढ़ा जाए, तो इसे एक सीधी कहानी के बजाय एक ही जगह की अलग-अलग ऐतिहासिक गहराइयों से ली गई तीन झांकियों के समूह के रूप में बेहतर समझा जा सकता है। 'वैश्वानर' और 'गली आगे मुड़ती है' मुख्य रूप से आज के या हाल के समय के बनारस पर आधारित हैं—एक ऐसा शहर जिसमें तंग गलियां, आम गृहस्थ, कामकाजी लोग और आधुनिक सामाजिक-आर्थिक जीवन की रोज़मर्रा की जद्दोजहद है। वहीं, 'नीला चाँद' मध्यकाल में ले जाता है, बारहवीं सदी के इतिहास के किरदारों—लक्ष्मी कर्ण और अवल्ला देवी की कहानी—के ज़रिए उस काशी की ओर जिसका शासन उन्होंने किया था। बनारस की साहित्यिक कल्पना पर लिखते हुए विद्वान राणा पी. बी. सिंह ने कहा है कि 'नीला चाँद' इस बात के लिए खास है कि यह शहर के भौतिक परिवेश को उसकी संस्कृति से जोड़ता है; यह भूगोल को महज़ एक बेअसर पृष्ठभूमि के बजाय अर्थों के भंडार के तौर पर देखता है। यह बात पूरी ट्राइलॉजी के ढांचे के लिहाज़ से बहुत अहम है: सिंह सिर्फ़ काशी में कहानियाँ नहीं गढ़ते, बल्कि वे काशी की बनावट—इसके घाट, इसकी गलियां जो सीधी जाने के बजाय मुड़ती-फिरती हैं, इसके श्मशान घाट जहाँ मौत को रोज़ एक आम घटना के तौर पर देखा जाता है—को समय पर कहानी के चिंतन में एक सक्रिय हिस्सेदार की तरह पेश करते हैं।

'गली आगे मुड़ती है' शीर्षक—जिसका मोटा-मोटा मतलब है "गली आगे जाकर मुड़ती है"—सिंह की समय संबंधी पूरी कल्पना का एक छोटा लेकिन सटीक उदाहरण है। एक ऐसी गली जो मुड़ती है, न कि सीधी किसी साफ़ मंज़िल तक जाती है, पाठक को यह साफ़ नज़ारा नहीं दिखाती कि कहानी, शहर या इतिहास किस ओर बढ़ रहा है; इसके बजाय, यह आंशिक खुलासे के अनुभव पर ज़ोर देती है, जिसमें हर नया मोड़ एक ऐसे पैटर्न का नया हिस्सा दिखाता है जो इतना बड़ा है कि उसे एक बार में पूरा नहीं देखा जा सकता। यह छोटे पैमाने पर 'इटरनल रिटर्न' (हमेशा लौटने) का वह ढांचा है जिसे एलियाडे प्राचीन पवित्र समय से जोड़ते हैं: शहर किसी मंज़िल की ओर आगे नहीं बढ़ता, बल्कि खुद में ही घूमता रहता है; हर पीढ़ी उन्हीं गलियों, उन्हीं घाटों और उन्हीं रीति-रिवाजों को फिर से अपनाती है, भले ही उन पर चलने वाले इंसान बिल्कुल नए हों।

'नीला चाँद' असली ऐतिहासिक दूरी जोड़कर इस ढांचे को और गहरा बनाता है। चंदेल काल और उससे जुड़े मध्ययुगीन राजनीतिक माहौल पर आधारित, और खबरों के अनुसार असली ऐतिहासिक शिलालेखों और स्रोतों से जानकारी लेकर लिखा गया यह उपन्यास, 12वीं सदी की काशी को 20वीं सदी के उस शहर से एक औपचारिक रिश्ते में जोड़ता है जो इस त्रयी के बाकी हिस्सों का आधार है। इसका मकसद सिर्फ़ ऐतिहासिक उपन्यास की प्रमाणिकता दिखाना नहीं है; बल्कि लगातार तुलना के ज़रिए यह दिखाना है कि आधुनिक शहर के रीति-रिवाज, जगह की बनावट का तर्क, और यहाँ तक कि इच्छा और सत्ता के ढांचे भी मध्ययुगीन तौर-तरीकों से पूरी तरह अलग नहीं हैं, बल्कि उन्हीं का बदला हुआ रूप हैं। जहाँ एक सीधी-सादी ऐतिहासिक सोच 12वीं सदी को 20वीं सदी से अलग और बीता हुआ मानती है, वहीं सिंह की त्रयी का ढांचा यह बताता है कि मध्ययुग आधुनिक गलियों के नीचे एक आधार की तरह मौजूद है, जिसे सही तरह की कहानी-रूपी खुदाई से फिर से सामने लाया जा सकता है।

हालाँकि, इस 'हमेशा दोहराए जाने वाले' ढांचे को पूरी तरह से ठहराव या जड़ता के रूप में नहीं देखना चाहिए। सिंह की कहानियों में ऐसे पात्र हैं जिनकी निजी ज़िंदगी नुकसान, निराशा, पलायन और बदलाव से भरी है; असल में, उनके लेखन का 'आंचलिक' (क्षेत्रीय) पहलू आज़ादी के बाद के दशकों में ग्रामीण और छोटे कस्बों वाले भारत में आए साफ़ और अक्सर दर्दनाक बदलावों पर ही टिका है। इस त्रयी का दावा यह नहीं है कि काशी में कुछ भी नहीं बदलता, बल्कि यह है कि काशी में बदलाव एक गहरी निरंतरता के बीच होता है और आखिरकार उसी में समा जाता है — ठीक वैसे ही जैसे गंगा का पानी एक दिन से दूसरे दिन तक कभी एक जैसा नहीं रहता, फिर भी नदी — एक नाम वाली, पूजनीय और शाश्वत सत्ता के रूप में — हमेशा वही रहती है जो वह है।

5. नीला चाँद: एक ऐसी जगह जहाँ कई दौर की यादें बसी हैं और मध्यकाल की स्मृतियाँ

'नीला चाँद' की कहानी लक्ष्मी कर्ण और अवल्ला देवी जैसे ऐतिहासिक किरदारों पर आधारित है। यह उपन्यास ऐतिहासिक फिक्शन की उस लंबी भारतीय परंपरा का हिस्सा है, जिसमें पुराने शाही दौर का इस्तेमाल करके आज की चिंताओं पर परोक्ष रूप से बात की जाती है। लेकिन सिंह ने इस सामग्री का इस्तेमाल जिस तरह किया है, वह बहुत ही विद्रतापूर्ण और गहन है: कहा जाता है कि उपन्यास में शिलालेखों और अन्य ऐतिहासिक स्रोतों (जैसे अजगढ़ जैसी जगहों से मिली सामग्री) का इस्तेमाल किया गया है। साथ ही, इसमें संस्कृत, बौद्ध और पाली मूल की मध्यकालीन शब्दावली को इस तरह बुना गया है कि गद्य खुद एक तरह की भाषाई परत-दर-परत संरचना बन जाता है। इसमें हिंदी के पुराने और नए रूपों की परतें वैसे ही दिखती हैं, जैसे किसी पुरातात्विक स्थल पर सदियों की बसावट की परतें होती हैं। यादों के अध्ययन के लिए यह शैलीगत चुनाव महत्वपूर्ण है, क्योंकि इसका मतलब है कि 'नीला चाँद' सिर्फ़ कहानी के एक विषय के तौर पर यादों का वर्णन नहीं करता; यह भाषा के स्तर पर यादों को जीवंत करता है। यह हिंदी जानने वाले पाठक से कहता है कि वे उन बोलचाल के रूपों को एक-एक अक्षर करके फिर से खोजें, जो आम बोलचाल से गायब हो चुके हैं।विषय के स्तर पर, उपन्यास का शीर्षक—जिसका अर्थ "नीला चाँद" हो सकता है—ऐतिहासिक या कैलेंडर के समय के बजाय चक्रीय, खगोलीय समय में रुचि का संकेत देता है: चाँद चक्रीय गति का सबसे बड़ा उदाहरण है—घटता-बढ़ता है, फिर भी हमेशा लौट आता है। और शिव के साथ इसका जुड़ाव—जो अपने बालों में अर्धचंद्र धारण करते हैं और काशी के मुख्य देवता हैं—उपन्यास की केंद्रीय छवि को सीधे शहर की अपनी शाश्वत, ब्रह्मांडीय समझ से जोड़ता है। बारहवीं सदी के बारे में किसी उपन्यास का नाम किसी तारीख या राजवंश के बजाय चाँद के नाम पर रखना, शीर्षक पृष्ठ से ही यह संकेत देता है कि ऐतिहासिक विशिष्टता को ब्रह्मांडीय पुनरावृत्ति के दायरे में रखा जा रहा है।

उपन्यास की राजनीतिक सामग्री—शाही षड्यंत्र, युद्ध, शासकों का उत्थान और पतन—सिंह को ऐतिहासिक रूप से विशिष्ट, रैखिक सामग्री प्रदान करती है, जिसके आधार पर शहर के शाश्वत दावों की परख की जा सकती है। राजा मरते हैं, राजवंश खत्म होते हैं, और बारहवीं सदी की काशी की विशिष्ट राजनीतिक व्यवस्थाएँ, सामान्य ऐतिहासिक अर्थों में, पूरी तरह से खत्म हो चुकी हैं; सिंह द्वारा वर्णित मध्यकालीन शासन-व्यवस्था का कोई भी अंश ट्रिलॉजी के अन्य खंडों में वर्णित बीसवीं सदी के बनारस में नहीं बचता है। फिर भी, इस नॉवेल का मुख्य तर्क—जो इस ट्राइलॉजी (तीन नॉवेल की सीरीज़) की सोच से मेल खाता है—यह है कि यह राजनीतिक नश्वरता (यानी राजनीतिक सत्ता का खत्म होना) एक गहरी सांस्कृतिक और पवित्र निरंतरता के साथ-साथ चलती है: घाट, नदी, मंदिर और उनसे जुड़ी रस्में और जीवन-शैली तब भी बनी रहती हैं, जब उन्हें संरक्षण देने वाली राजनीतिक व्यवस्था पूरी तरह खत्म हो चुकी होती है। इस नज़रिए से देखें तो नॉवेल में यादें कम से कम दो अलग-अलग स्तरों पर काम करती हैं—एक तो कमज़ोर, ऐतिहासिक रूप से खास राजनीतिक यादें, जिन्हें फिर से पाने के लिए विद्वानों की रिसर्च (जैसे शिलालेख, पुराने दस्तावेज़, ऐतिहासिक नॉवेल लिखने वाले की रिसर्च) की ज़रूरत होती है; और दूसरी, मज़बूत और रस्मों-रिवाजों में रची-बसी यादें, जो दस्तावेज़ों के बजाय हाव-भाव और रोज़मर्रा के कामों में ज़िंदा रहती हैं और जिन्हें कभी फिर से बनाने की ज़रूरत नहीं पड़ी क्योंकि वे कभी खोई ही नहीं थीं।यादों का यह दोहरा स्तर, शायद 'नीला चाँद' का समय-बोध वाले फिक्शन (काल्पनिक साहित्य) के सिद्धांत में सबसे अहम योगदान है, क्योंकि यह उस आसान और आम साहित्यिक तरीके को नकारता है जिसमें या तो ऐतिहासिक यादों को या फिर हमेशा से चली आ रही निरंतरता को ही एकमात्र सच मान लिया जाता है। अगर कोई नॉवेल सिर्फ़ उस खत्म हो चुकी राजनीतिक दुनिया को दिखाता, तो वह एक शोक-गीत जैसा होता; और अगर कोई नॉवेल सिर्फ़ उस कभी न बदलने वाले रस्मों-रिवाजों वाले शहर को दिखाता, तो वह बिना किसी नाटकीय उतार-चढ़ाव वाली, इतिहास से अलग एक काल्पनिक कथा (मिथक) बनकर रह जाता। यहाँ की व्याख्या के अनुसार, सिंह की कामयाबी यह है कि उन्होंने इन दोनों को एक ही कहानी के दायरे में पिरोया है, ताकि पाठक ऐतिहासिक नुकसान और पवित्र निरंतरता को एक ही शहर की एक साथ और समान रूप से वास्तविक विशेषताओं के तौर पर महसूस कर सकें।

6. 'गली आगे मुड़ती है' और 'वैश्वानर': बिखरे हुए समय की जगह के तौर पर आधुनिक शहर

अगर 'नीला चाँद' इस त्रयी (तीन किताबों की सीरीज़) को गहरा ऐतिहासिक आधार देता है, तो 'गली आगे मुड़ती है' और 'वैश्वानर' इसे आज के दौर का, जीते-जागते अनुभव वाला आधार देते हैं। यहीं पर सिंह की पहचान हिंदी शहरी-कथा साहित्य के एक अगुआ के तौर पर सबसे साफ़ तौर पर बनती है, जो गाँव पर केंद्रित 'आंचलिक' शैली से बिल्कुल अलग है। 'गली आगे मुड़ती है' 1967 में छपी थी—और इस तरह कहानी के समय-क्रम में बाद की होने के बावजूद, यह त्रयी की सबसे पहले लिखी गई किताब है। पाठक अक्सर कहते हैं कि यह बनारस, उसकी गलियों और उसके सामाजिक ताने-बाने की लगभग पूरी तस्वीर पेश करती है। यह संपूर्णता अपने आप में समय को दिखाने की एक रणनीति है: आज के शहर की पूरी और एक साथ मौजूद समग्रता को दिखाने की कोशिश करके, सिंह वह ज़मीन तैयार करते हैं जिस पर त्रयी की बाद की किताबें—'वैश्वानर' और 'नीला चाँद'—शहर के गहरे अतीत की पड़ताल कर सकें।

इन दो उपन्यासों से जो आधुनिक शहर उभरता है, उसे भक्ति साहित्य में मशहूर 'शाश्वत काशी' के सीधे और बिना किसी रुकावट के चलने वाले रूप में नहीं दिखाया गया है। यह एक ऐसा शहर है जो साफ़ तौर पर ऐतिहासिक समय के आम उतार-चढ़ाव और टूट-फूट का शिकार है: आर्थिक तंगी, आधुनिकीकरण का दबाव, पारंपरिक पेशों और बदलती अर्थव्यवस्था के बीच टकराव, और व्यक्तिगत जीवन की वे निजी, आम निराशाएँ जो किसी बड़े ब्रह्मांडीय पैटर्न में नहीं ढलतीं। इस लिहाज़ से, त्रयी की शहरी किताबें सिंह की 'आंचलिक' कहानियों के सामाजिक यथार्थवाद से ज़्यादा मेल खाती हैं, न कि केवल शाश्वतता पर केंद्रित किसी विषय-आधारित सोच से। इन उपन्यासों में, पवित्र ब्रह्मांड-विज्ञान वाली शाश्वत काशी का गरीबी, मेहनत और बदलाव वाली पूरी तरह ऐतिहासिक काशी के साथ लगातार और अक्सर बेचैन करने वाला तालमेल चलता रहता है।जो चीज़ इस तालमेल को सीधे-सीधे सामाजिक यथार्थवाद या सीधे-सीधे भक्ति-भाव के जश्न में बदलने से रोकती है, वह है व्यक्तिगत पात्रों के स्तर पर यादों को लेकर सिंह का तकनीकी कौशल। इन उपन्यासों के पात्र अक्सर विरासत में मिली यादें साथ लेकर चलते हैं और उन्हीं से बनते हैं—जैसे परिवार का इतिहास, पुराने पड़ोसियों की यादें, शहर के लंबे अतीत के अधूरे समझे गए किस्से। ये ऐसी चीज़ें हैं जिन्हें उन्होंने खुद नहीं देखा, फिर भी ये तय करती हैं कि वे कौन हैं और उनके आस-पास की गलियों का क्या मतलब है। यह 'कल्चरल मेमोरी थ्योरी' (सांस्कृतिक स्मृति सिद्धांत) के उस विचार के करीब है, जो मॉरिस हॉल्बवाक्स जैसे विद्वानों के 'कलेक्टिव मेमोरी' (सामूहिक स्मृति) पर किए गए काम पर आधारित है। इसे ऐसी सामाजिक रूप से आगे बढ़ती हुई, बिना अनुभव वाली स्मृति के तौर पर बताया जा सकता है, जो फिर भी अतीत के प्रति एक जीते-जागते नज़रिए की तरह काम करती है। इस नज़रिए से देखें तो सिंह के पात्र वे माध्यम हैं जिनके ज़रिए शहर की पुरानी यादें आज भी ज़िंदा हैं, भले ही उन पात्रों की ऐतिहासिक जानकारी (चाहे वह मध्यकालीन हो या कोई और) तक सीधी पहुँच न हो — ऐसी जानकारी जो 'नीला चाँद' जैसा उपन्यास बाद में पाठक को देता है।

इन शहरी उपन्यासों में जो तस्वीर उभरती है, उसमें वर्तमान पहले से ही उस अतीत से भरा हुआ है जिसे पहचाना नहीं गया है: पात्र ऐसी यादों के बीच जीते हैं जिन्हें वे पूरी तरह से यादें नहीं मानते; वे विरासत में मिली परंपराओं, हाव-भाव और मान्यताओं को बस "चीज़ें जैसी हैं, वैसी ही हैं" मानते हैं, न कि जमी हुई या संचित इतिहास के तौर पर। असल में, बिना सोचे-समझे चली आ रही निरंतरता और उसके नीचे दबी गहरी ऐतिहासिक परतों के बारे में पाठक की बढ़ती समझ (जो पूरी त्रयी में विकसित होती है) के बीच का यही फ़र्क इन शहरी उपन्यासों को खास असरदार बनाता है। यही बात 'गली आगे मुड़ती है' और 'वैश्वानर' को 'नीला चाँद' (जो ज़्यादा मशहूर है) की महज़ छोटी भूमिकाएँ मानने के बजाय, उसके ज़रूरी साथी के तौर पर पढ़ने को सही ठहराती है।

7. सनातन सत्य: सिंह की सोच में शाश्वत वास्तविकता का विचार

यह समझने के बाद कि सिंह की कहानियाँ समय को कई परतों वाला और यादों को नाज़ुक और टिकाऊ, दोनों तरह से कैसे दिखाती हैं, अब यह सवाल उठता है कि उनकी सोच में 'सनातन सत्य' (शाश्वत वास्तविकता) का विचार असल में क्या काम करता है। क्या इसे लेखक की सच्ची आध्यात्मिक या दार्शनिक मान्यता माना जाए या फिर निरंतरता के बारे में एक ज़्यादा धर्मनिरपेक्ष और सांस्कृतिक तर्क को आगे बढ़ाने के लिए इस्तेमाल किया गया एक साहित्यिक तरीका? यह अध्ययन बताता है कि सबसे सुरक्षित नज़रिया यह है कि 'शाश्वत' को दार्शनिक अर्थ में किसी ऐसे सिद्धांत के तौर पर न देखा जाए जिसे उपन्यास साबित करने की कोशिश कर रहे हैं, बल्कि एक ऐसे आधार या क्षितिज के तौर पर देखा जाए जिसके संदर्भ में उपन्यासों की ऐतिहासिक सामग्री को व्यवस्थित और अर्थपूर्ण बनाया जाता है — जिसे कथा-विशेषज्ञ 'बनाने वाली श्रेणी' के बजाय 'नियंत्रक श्रेणी' कह सकते हैं।

यह फ़र्क इसलिए ज़रूरी है क्योंकि इससे आलोचक काशी के पवित्र और समय से परे दर्जे के बारे में हिंदू ब्रह्मांडीय विचारों से सिंह के स्पष्ट जुड़ाव को गंभीरता से ले सकते हैं, बिना उपन्यासों को केवल भक्ति-साहित्य या धार्मिक तर्क का रूप दिए। यह त्रयी बार-बार ऐसी स्थितियाँ दिखाती है जहाँ नुकसान, नश्वरता या ऐतिहासिक उथल-पुथल का सामना कर रहे पात्रों को अपनी तात्कालिक परिस्थितियों के समाधान से नहीं, बल्कि शहर की किसी ऐसी चीज़ के संपर्क से सांत्वना या नई दिशा मिलती है जो उन परिस्थितियों से पूरी तरह अलग या परे लगती है — जैसे कोई अनुष्ठान, किसी खास समय पर नदी का नज़ारा, या श्मशान घाट पर बिताया गया कोई पल जहाँ मौत को किसी असाधारण आपदा के बजाय एक सामान्य, रोज़मर्रा की घटना माना जाता है। हर मामले में, 'शाश्वत' ऐतिहासिक पीड़ा के जवाब के बजाय एक ऐसे फ्रेम या आधार के तौर पर काम करता है जो ऐसी पीड़ा को सहने लायक बनाता है; यह पीड़ा को एक बड़ी निरंतरता के भीतर रखता है जिसे कोई पात्र पूरी तरह तो नहीं देख सकता, लेकिन कभी-कभी महसूस ज़रूर कर सकता है।इस तर्क के एक खास उदाहरण के तौर पर श्मशान घाट या अंतिम संस्कार से जुड़े घाटों पर रुककर सोचना ज़रूरी है, क्योंकि बनारस का धार्मिक महत्व काफ़ी हद तक इस बात से जुड़ा है कि यहाँ मरने से पुनर्जन्म के चक्र से मुक्ति मिलती है। ऐसा शहर जिसकी पवित्र व्यवस्था मौत की लगातार, रोज़मर्रा की मौजूदगी पर टिकी हो, वह परिभाषा के अनुसार एक ऐसा शहर है जिसने व्यक्तिगत और ऐतिहासिक नश्वरता को ब्रह्मांडीय और शाश्वत निरंतरता में बदलने के लिए एक पूरा सांस्कृतिक ढाँचा तैयार किया है। सिंह की कहानियाँ इसी माहौल में पूरी तरह रची-बसी हैं और उसी ढांचे को अपनाकर उसे कहानी का रूप देती हैं: त्रयी की कहानियों में आने वाली अलग-अलग मौतें, अंत और ऐतिहासिक समापन पाठकों के सामने एक व्यापक और स्थिर लय — जैसे नदी, रीति-

रिवाज, मंदिर की घंटी — के साथ पेश किए जाते हैं; यह लय उन अंतों को अपने में समाहित कर लेती है, बिना खुद बदले।साथ ही, सिंह की कहानियाँ इस आसान सोच का विरोध करती हैं कि शाश्वतता इतिहास पर जीत हासिल कर लेती है। 'आंचलिक' उपन्यासों और 'काशी त्रयी' के शहरी हिस्सों — दोनों में ही दिखने वाली सामाजिक और आर्थिक मुश्किलों को कभी भी भ्रम या किसी गहरी, शांत और शाश्वत सच्चाई के ऊपर ऊपरी हलचल के तौर पर नहीं दिखाया गया है; गरीबी, जातिगत टकराव और कामकाजी जीवन की आम मुश्किलों पर सिंह की यथार्थवादी नज़र इतनी गहरी और खास है कि उन्हें सिर्फ़ कहानी की पृष्ठभूमि नहीं माना जा सकता। ज़्यादा सही बात यह है कि सिंह की कहानियाँ ऐतिहासिक और शाश्वत तत्वों को एक-दूसरे के अधीन करने के बजाय, उनके बीच एक सार्थक और अनसुलझा तनाव बनाए रखती हैं — ठीक यही वह दोहरा नज़रिया है जिसे इस अध्ययन ने त्रयी के तीनों हिस्सों में देखा है, और यही बात समय, याद और शाश्वत सच्चाई को अलग-अलग मुद्दों के बजाय एक ही कलात्मक समस्या के तीन पहलुओं के तौर पर देखने को सही ठहराती है।

8. आंचलिक सवाल: क्षेत्रीय समय बनाम राष्ट्रीय आधुनिकता

सिंह के समय और यादों से जुड़े काम को सिर्फ़ उनकी काशी-केंद्रित कहानियों तक सीमित मानना एकगलतीहोगी।उनकेक्षेत्रीययया'आंचलिक' उपन्यास, जो पवित्र शहर के बजाय उत्तरी भारत के ग्रामीण इलाकों पर आधारित हैं, वही बुनियादी सवाल एक अलग अंदाज़ में उठाते हैं: कोई जगह ऐतिहासिक बदलावों के बीच अपनी पहचान खोए बिना कैसे बनी रहती है? जहाँ काशी ट्राइलॉजी (तीन उपन्यासों की श्रृंखला) इस सवाल का जवाब काशी के खास धार्मिक महत्व से जुड़े शाश्वत और ब्रह्मांडीय नज़रिए से देती है, वहीं आंचलिक कहानियों में ऐसी किसी ब्रह्मांडीय मान्यता का सहारा नहीं लिया जाता; गाँव को, तीर्थ की तरह, ऐतिहासिक समय से परे नहीं माना जाता। अगर गाँव में निरंतरता दिखती है, तो उसे रीति-रिवाजों, नाते-रिश्तेदारी, बोली और खेती-बाड़ी से जुड़ी ज़िंदगी की व्यावहारिक लय में ही खोजना होगा।

यह फ़र्क उस आलोचनात्मक उपेक्षा को काफी हद तक समझाता है जो सिंह की आंचलिक कहानियों को हिंदी के संभ्रांत हलकों से झेलनी पड़ी। वे आंचलिक लेखन को महज़ दस्तावेज़ी मानते थे—स्थानीय रंग-ढंग, बोली और ग्रामीण गरीबी का एक सच्चा लेकिन कलात्मक रूप से साधारण ब्यौरा, जिसमें शहरी, कॉस्मोपॉलिटन साहित्य जैसी व्यापक अपील की कमी थी। अगर सिंह के समय से जुड़े व्यापक सरोकारों को ध्यान में रखकर पढ़ा जाए, तो एक अलग राय बनती है: क्षेत्रीय उपन्यासों को इस बात की पड़ताल के तौर पर समझा जा सकता है कि क्या बदलाव के बीच बनी रहने वाली वही निरंतरता—जिसे काशी ट्राइलॉजी पवित्र ब्रह्मांडीय व्यवस्था में पाती है—उसे आज़ादी के बाद के सामाजिक और आर्थिक बदलावों के भारी दबाव के बावजूद ग्रामीण रीति-रिवाजों और समुदाय के साधारण, गैर-पवित्र अस्तित्व में भी खोजा जा सकता है। अगर ऐसा है, तो सिंह की आंचलिक और काशी-केंद्रित कहानियाँ दो अलग-अलग साहित्यिक परियोजनाएँ नहीं, बल्कि एक ही समस्या को अलग-अलग स्थितियों में समझने के दो प्रयोग हैं—एक जहाँ शाश्वतता सांस्कृतिक रूप से एक संसाधन के तौर पर उपलब्ध है, और दूसरी जहाँ ऐसा नहीं है, और निरंतरता को ज़्यादा कठोर, नाज़ुक और विवादित चीज़ों से गढ़ना पड़ता है।

इस नज़रिए से देखने पर, सिंह के "क्षेत्रीय" और "शहरी" लेखन को अक्सर आलोचनात्मक तौर पर अलग-अलग करके देखने से उनके व्यापक साहित्यिक काम की एकजुटता कम करके आंकी जाती है। 'आंचलिक' उपन्यासों का गाँव और 'काशी ट्रिलॉजी' का शहर—दोनों ही, अपने-अपने अलग तरीकों से, ऐसी प्रयोगशालाएँ हैं जहाँ यह परखा जाता है कि किसी समुदाय की विरासत में मिली यादें कितना ऐतिहासिक बदलाव झेल सकती हैं, इससे पहले कि वे यादें ही खत्म हो जाएँ। यह एक ऐसा सवाल था जिसे बीसवीं सदी के आखिर में भारत के लिए पूछना बहुत ज़रूरी था, क्योंकि उस समय देश के गाँवों और पुराने शहरों में आज़ादी के बाद तेज़ी से बदलाव आ रहे थे। और सिंह, जो अपनी ज़िंदगी के ज़रिए इन दोनों ही दुनियाओं के बीच मौजूद थे, अपने पूरे करियर के दौरान इस सवाल को समझने और उस पर काम करने के लिए सबसे सही स्थिति में थे।

9. आलोचनात्मक प्रतिक्रिया और इतिहास-लेखन में स्थान

हिंदी साहित्य के इतिहास में सिंह का स्थान उसी दोहरी स्थिति को दिखाता है जो इस अध्ययन में देखी गई है। 1990 में 'नीला चाँद' के लिए साहित्य अकादमी पुरस्कार, और साथ ही व्यास सम्मान और शारदा सम्मान मिलने से वे बीसवीं सदी के आखिर के सबसे सम्मानित हिंदी उपन्यासकारों में से एक बन गए। रेणु के बाद 'आंचलिक' शैली के एक बड़े लेखक के तौर पर उनकी पहचान उन्हें आज़ादी के बाद हिंदी कथा-साहित्य के ग्रामीण और क्षेत्रीय विषयों की ओर झुकाव वाली मुख्यधारा में मज़बूती से स्थापित करती है। साथ ही, इस पहचान को पक्का होने में कई दशक लग गए, और उनके क्षेत्रीय कथा-साहित्य को शहरी हिंदी बुद्धिजीवियों के विरोध का सामना करना पड़ा (जो ग्रामीण विषयों को कला की दृष्टि से कमतर मानते थे)। इससे पता चलता है कि सिंह का पूरा महत्व — एक ऐसे उपन्यासकार के तौर पर जिनका क्षेत्रीय और शहरी कथा-साहित्य मिलकर समय, स्मृति और निरंतरता पर दशकों तक चले चिंतन को दर्शाता है — हमेशा मानक आलोचनात्मक विवरणों में पूरी तरह शामिल नहीं किया गया है। इन विवरणों में

अक्सर 'आंचलिक' उपन्यासों और 'काशी त्रयी' को उनके करियर के अलग-अलग और बहुत कम जुड़े हुए चरणों के तौर पर देखा गया है।

बनारस को एक साहित्यिक जगह के तौर पर सिंह के चित्रण पर केंद्रित विद्वतापूर्ण काम — जैसे राणा पी. बी. सिंह का शहर के सांस्कृतिक परिदृश्य और साहित्यिक छवियों पर काम — 'नीला चाँद' जैसे उपन्यास में परिदृश्य और संस्कृति के गहरे जुड़ाव पर ज़ोर देकर एक ज़रूरी सुधार पेश करता है। यह अध्ययन उस समझ को और आगे बढ़ाता है और यह तर्क देता है कि सिंह के कथा-साहित्य में परिदृश्य सबसे बढ़कर समय के भंडार के तौर पर काम करता है: घाट, गलियाँ और नदी सिर्फ़ सुंदर या प्रतीकात्मक जगहें नहीं हैं, बल्कि स्मृति के सक्रिय माध्यम हैं। इनके ज़रिए सदियों का समय उन पात्रों और पाठकों के लिए उपलब्ध होता है जिन्होंने उस समय को नहीं जिया था।सिंह को इतिहास-लेखन में सही जगह देने के लिए उनके समकालीन हिंदी उपन्यासकारों (जो इतिहास और स्मृति से जुड़े सवालों पर काम कर रहे थे) के साथ तुलनात्मक अध्ययन की भी ज़रूरत होगी। साथ ही, उसी दौर में कई भारतीय भाषाओं में दिख रही उस व्यापक उत्तर-औपनिवेशिक साहित्यिक रुचि को भी देखना होगा, जिसमें प्राचीन या पवित्र शहरों — जिनमें बनारस प्रमुख है — का इस्तेमाल राष्ट्रीय आधुनिकता और विरासत में मिले सभ्यतागत समय के बीच के रिश्ते को समझने के लिए किया गया था। इस तरह की तुलनात्मक स्टडी इस पेपर के दायरे से बाहर है, लेकिन यहाँ दी गई बातों के आधार पर आगे की रिसर्च के लिए इसे एक स्वाभाविक कदम के तौर पर बताना ज़रूरी है। ऐसा इसलिए है क्योंकि 'आंचलिक यथार्थवाद', डुरेल से आंशिक रूप से ली गई ऐतिहासिक-उपन्यास तकनीक और पवित्र व शाश्वत समय की देसी हिंदू अवधारणाओं का सिंह का खास मेल इतना अनोखा है कि इसी तरह के विषयों पर काम करने वाले दूसरे लेखकों के साथ इसकी गहरी तुलना करना फायदेमंद होगा।

10. निष्कर्ष

इस अध्ययन में यह तर्क दिया गया है कि शिवप्रसाद सिंह की कहानियों—और खासकर उनकी काशी-त्रयी (वैश्वानर, नीला चाँद और गली आगे मुड़ती है)—को ऐतिहासिक समय, सांस्कृतिक स्मृति और काशी जैसे पवित्र शहर में मौजूद 'शाश्वत सत्य' के बीच के रिश्ते पर एक लगातार और नए ढंग से किए गए चिंतन के तौर पर सबसे बेहतर समझा जा सकता है। इन विषयों को अलग-अलग मानने के बजाय, इस तर्क में यह दिखाने की कोशिश की गई है कि ये आपस में कैसे जुड़े हैं: सिंह की कहानियों में समय एक सीधी रेखा में चलने के बजाय कई परतों वाला और अक्सर चक्र की तरह घूमता हुआ महसूस होता है; यादें कम से कम दो अलग-अलग स्तरों पर काम करती हैं—एक तो नाज़ुक दस्तावेज़ी याद जिसे विद्वानों या उपन्यासकारों द्वारा फिर से बनाने की ज़रूरत होती है, और दूसरी मज़बूत, रची-बसी रस्मी याद जो बिना किसी कोशिश के बनी रहती है; और शाश्वत सत्य किसी ऐसे दार्शनिक दावे की तरह काम नहीं करता जिसे उपन्यास साबित करने की कोशिश करते हैं, बल्कि एक ऐसे क्षितिज की तरह काम करता है जिसके सामने ऐतिहासिक नुकसान और बदलाव सहने लायक और अर्थपूर्ण बन जाते हैं, बिना उन्हें नकारे या उनकी व्याख्या किए।

इस नज़रिए से देखने पर पता चलता है कि काशी-त्रयी का लॉरेंस डरेल की 'अलेक्जेंड्रिया क्वार्टेट' से तकनीकी जुड़ाव सिर्फ़ बाहर से ली गई बनावट से कहीं ज़्यादा है: यह सिंह की एक ऐसा आधुनिक उपन्यास का रूप बनाने की कोशिश है जो पवित्र समय के बारे में प्राचीन, देसी दावे के साथ न्याय कर सके। यह इस बात की भी जाँच करता है कि क्या होता है जब कई नज़रियों वाली और कई परतों वाली कहानी कहने की तकनीक ऐसे शहर पर लागू की जाती है जिसे हिंदू ब्रह्मांड-विज्ञान पहले से ही इतिहास से कुछ हद तक बाहर मानता है। क्षेत्रीय या 'आंचलिक' साहित्य को इस शहरी प्रोजेक्ट से अलग या कमतर मानने के बजाय इसके साथ रखकर पढ़ने पर वही बुनियादी सवाल एक अलग माहौल—आज़ादी के बाद का ग्रामीण उत्तरी भारत—तक फैलता है। यहाँ निरंतरता को ब्रह्मांडीय मंज़ूरी का सहारा नहीं मिल सकता, बल्कि उसे रीति-रिवाजों, नातेदारी और समुदाय जैसी मुश्किल और विवादों से घिरी चीज़ों में खोजना पड़ता है, जो ऐतिहासिक दबाव में होती हैं।

डॉक्टरेट स्तर पर किए गए आलोचनात्मक अध्ययन के लिए, सिंह को इस नज़रिए से फिर से देखने का महत्व इस बात में है कि उनका साहित्य दो आम और आसानी से अपना ली जाने वाली साहित्यिक सोच का विरोध करता है: एक तो सीधी-सादी पुरानी यादों में खोई परंपरावादी सोच जो अतीत को बस खोया हुआ मानती है, और दूसरी सीधी-सादी प्रगतिशील आधुनिकतावादी सोच जो अतीत को बस एक ऐसी बाधा मानती है जिसे पार करना है। सिंह की काशी न तो शोक का विषय है और न ही उसे नकारा गया है; इसे एक ऐसी जगह के तौर पर बताया गया है जहाँ समय घूमता रहता है, जहाँ रास्ता हमेशा आगे जाकर मुड़ जाता है, और जहाँ हमेशा रहने वाली और ऐतिहासिक चीज़ें, आखिरी पन्ने तक, बिना सुलझे और काम के मेल में साथ-साथ बनी रहती हैं। भविष्य की रिसर्च इस स्टडी को और आगे बढ़ा सकती है; इसके लिए सिंह की हिंदी गद्य की खास शैलीगत खूबियों पर और ध्यान दिया जा सकता है, उनके काम को पोस्ट-कोलोनियल पवित्र-शहर फिक्शन के तुलनात्मक फ्रेमवर्क में पूरी तरह से रखा जा सकता है, और बनारस व दूसरे ऐसे शहरों के बारे में लिखने वाले हिंदी उपन्यासकारों की बाद की पीढ़ियों में उनकी समय-संबंधी सोच के असर को देखा जा सकता है—ऐसे शहर जिन्हें उनकी अपनी सांस्कृतिक परंपराओं में समय की आम समझ से कम से कम कुछ हद तक अलग माना जाता है।

संदर्भ

1. बख्तिन, मिखाइल एम. (1981). द *डायलॉगिक इमैजिनेशन: फोर एसेज* (माइकल होल्क्विस्ट, संपा.; कैरिल इमर्सन एवं माइकल होल्क्विस्ट, अनु.). यूनिवर्सिटी ऑफ़ टेक्सास प्रेस।
2. बर्गसन, हेनरी. (1911). *मैटर एंड मेमोरी* (नैन्सी मार्गरेट पॉल एवं डब्ल्यू. स्कॉट पामर, अनु.). जॉर्ज एलन एंड अनविन। (मूल कृति 1896 में प्रकाशित)
3. डुरेल, लॉरेंस. (1957–1960). द *अलेक्जेंड्रिया क्वार्टेट*। फेबर एंड फेबर।
4. एक, डायना एल. (1982). *बनारस: सिटी ऑफ़ लाइट*। अल्फ्रेड ए. नॉफ।
5. एलियाडे, मिर्सिया. (1954). द *मिथ ऑफ़ द इटरनल रिटर्न: कॉसमॉस एंड हिस्ट्री* (विलार्ड आर. ट्रैस्क, अनु.). प्रिंसटन यूनिवर्सिटी प्रेस।
6. हल्बवाच्स, मौरिस. (1992). *ऑन कलेक्टिव मेमोरी* (लुईस ए. कोसर, संपा. एवं अनु.). यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस।
7. रिकोर, पॉल. (1984–1988). *टाइम एंड नैरेटिव* (खंड 1–3; कैथलीन मैकलॉफलिन एवं डेविड पेलाउर, अनु.). यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस।
8. रिकोर, पॉल. (2004). *मेमोरी, हिस्ट्री, फॉरगेटिंग* (कैथलीन ब्लेमी एवं डेविड पेलाउर, अनु.). यूनिवर्सिटी ऑफ़ शिकागो प्रेस।
9. सिंह, नामवर. (1993). *कहानी: नये सवाल*। राजकमल प्रकाशन।
10. सिंह, राणा पी. बी. (2004). *कल्चरल लैंडस्केप्स एंड द लाइफवर्ल्ड: लिटरेरी इमेजेज ऑफ़ बनारस*। इंडिका बुक्स।
11. सिंह, शिवप्रसाद. (1967). *गली आगे मुड़ती है*। राजकमल प्रकाशन।
12. सिंह, शिवप्रसाद. (1990). *नीला चाँद*। राजकमल प्रकाशन।
13. सिंह, शिवप्रसाद. (प्रकाशन वर्ष उपलब्ध नहीं).*अलग-अलग वैतरणी*। राजकमल प्रकाशन।
14. सिंह, शिवप्रसाद. (प्रकाशन वर्ष उपलब्ध नहीं).*वैश्वानर*। राजकमल प्रकाशन।